रे पिरीयम, हथ तोहिजडे हाल।
आए डी वेरां उथणजी, हांणे पसां नूरजमाल।। १ ।।

हे धनी हमारी डोरी (हालत) अब आपके हाथ में है। अब समय उठने का आ गया है। अब उठकर आपको देखूंगी।

अरवाहें जा हिन अर्स जी, कीं छडे खिलवत हक।
जा डेखारिए रूहके, ते में जरो न सक।। २ ।।

परमधाम की जो रूहें हैं, वह अपने मूल-मिलावा और श्री राजजी महाराज को कैसे छोड़ सकती हैं? आपने मूल-मिलावा में रूहों को बिठाकर खेल दिखाया है। इसमें जरा भी संशय नहीं है।

हिन अर्सजे बाग में, आयूं मुदयूं मींह।
हिन वेरां असां के, जुदयूं रख्यूं कींह।। ३ ।।

हे राजजी महाराज! परमधाम के बगीचों में वर्षा ऋतु आ गई है। इस समय आपने हमको अलग क्यों कर रखा है?

वडे अर्सजे मोहोल में, मिडावा रूहन।
आयासी मोहोल बाग जे, मथड़ा मींह झबन।। ४ ।।

परमधाम के रंग महल में हम रूहों का मिलावा है, जहां हम मिलकर रहती हैं। उस रंग महल की आकाशी के बगीचों में ऊपर से पानी बरसता है।

अर्स बाग जे मोहोल में, झरोखे झांखन।
तो डिंने असां जे दिल में, हे सुख याद अचन।। ५ ।।

परमधाम के झरोखों से झांककर उन बगीचों को देखने के सुख जो आपने दे रखे हैं, वह हमें याद आते हैं।

चढी नी आयूं सेरडियूं, कपरियूं गजन।
ए सुख डिए रूहन के, वन में विज्यूं खेवन।। ६ ।।

बादल चढ़ आए हैं और गरज रहे हैं। बिजली वन में चमक रही है। यह सुख हम रूहों को आप देते थे।

चढी झरोखे न्हारजे, मींह वसे मथें वन।
वींटी वरियूं वडरियूं, हिन वेरां बाग सोहन।। ७ ।।

रंग महल के झरोखे से चढ़कर देखते हैं तो वनों के ऊपर पानी बरसता है। बादलों ने चारों तरफ से घेर रखा है। ऐसे समय में बगीचे बहुत सुहावने लगते हैं।

अर्स अग्यां चांदनी, चई चोतरन।
हिन मुदयूं मींह संदियूं, दोडे चढ़ें ठेकन।। ८ ।।

हे श्री राजजी महाराज! रंग महल के आगे चांदनी चौक में चार चबूतरे हैं। इस वर्षा ऋतु में उन पर दौड़ती हैं, चढ़ती हैं और कूदती हैं।

Nijanand App

अग्यां अर्स बागमें, करे कोइलडी टहुंकार।
ढ़ेली मोर कणकियां, जमुना जोए किनार।। ९ ।।

रंग महल के आगे बगीचे में कोयल आवाज करती है। जमुनाजी के किनारे पर मोर तथा मोरनियां (ढेल) आवाज करती हैं।

मथेनी वसे मींहडो, वानर मोर कुडन।
कई नी जातूं जानवर, कई जातूं पसुअन।। १० ।।

ऊपर से बरसात बरसती है। नीचे बन्दर और मोर खुशी से खुशियां मनाते हैं और भी कई जाति के जानवर और पशु खुशी मनाते हैं।

पसु पंखी हिन अर्सजा, ते कीं चुआं चित्राम।
मिठी मोंहें मीठी जिकर, ए डिए रूहें आराम।। ११ ।।

परमधाम के पशु-पक्षियों के चित्रों की हकीकत कैसे बताऊं? वह अपने मधुर मुख से मीठी-मीठी बातें करके सखियों को सुख देते हैं।

वाओ अचे बागनमें, डालरियूं उलरन।
रूहें रांद करींदियूं, मथें चढ्यूं लुडन।। १२ ।।

बगीचों में सुन्दर हवा आने से डालियां झूमती हैं और सखियां खेलती हुई उन पर चढ़कर झूलती हैं।

जानवर जे हिन बाग जा, डारी डारी त्रपन।
मिठडी चूंजे मीठी वाणियां, हे रांदिका रूहन।। १३ ।।

परमधाम के इन बागीचों के पशु पक्षी डाली-डाली पर कूदते हैं और वह अपने मीठे मुखों से मधुर बोली बोलते हैं। यह सब सखियों के खिलौने हैं।

हिन मुंद्यूं मींह संदियूं, रूहें रांद करीन।
दोडे कूडे मींहमें, पांहिजे साथ पिरीन।। १४ ।।

इस वर्षा ऋतु में सखियां खेल करती हैं। वह अपने धनी के साथ पानी में दौड़ती-कूदती हैं।

सुखडा जे हिन अर्सजा, आईन सभे कमाल।
रूहें बड़ीरूह विचमें, धणी सो नूरजमाल।। १५ ।।

परमधाम के यह सुख बड़े कमाल के हैं। रूहें श्री राजजी और श्री श्यामाजी से सुख लेती हैं।

सेहेरयूं कपरियूं नूर ज्यूं, मिठडा नूर गजन।
वसेथ्यूं नूर वडरियूं, वीजडियूं नूर खेवन।। १६ ।।

आसमान के बादल नूर के समान स्वच्छ हैं। मधुर नूर की गरजना होती है। ऊपर से नूर की बरसात होती है और नूर की ही बिजली चमकती है।

मिठडो वाओ नूर जो, अचे नूर खुसबोए।
हे सुख अर्स बाग में, कीं चुआं किनारे जोए।। १७ ।।

नूर की हवा बहती है और नूर की खुशबू आती है। जमुनाजी के किनारे परमधाम के बगीचों के सुख कैसे कहूं?

Nijanand App

महामत चोए मेहेबूबजी, तो पसाएं पसन।
अंखियूं नी आसा एतियूं, मूंजी रूहजी या रूहन।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे लाड़ले धनी! अब आप ही दिखाओ तो देखें। हमारी या रूहों की आंखों की इतनी ही चाहना है।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। ७५ ।।

रे पिरीयम, मंगां सो लाड करे।
एहेडी किजकां मुदसे, खिलंदडी लगां गरे।। १ ।।

हे धनी! मैं आपसे मिलापकर, लाड़ करके मांगती हूं। मुझ पर कोई ऐसी मेहर करो कि मैं हंसती हुई आपके गले से आकर चिपट जाऊं।

तो मूंके चेओ तूं मूंहजी, हेडी करे निसबत।
धणी मूंहजे धामजा, आंऊं हांणे को हिन भत।। २ ।।

आपने मुझ से कहा कि तू मेरी अंगना है। हे मेरे धाम के धनी! तो फिर मेरी ऐसी हालत क्यों है?

एहेडो संग करे मूंहसे, अची डिंनिंए सांजाए।
इलम डिंनिंए बेसक जो, त आंऊं को बेठिस हीं पाए।। ३ ।।

मेरे से अपना ऐसा सम्बन्ध करके आपने अपने मुंह से अपनी पहचान कराई और अपना निःसन्देह ज्ञान दिया, तो अब इसे पाकर मैं बैठी कैसे रहूं?

इलम डिंने पांहिजो, जेमें सक न कांए।
डिंनिंए संग साहेबी, हित जाणजे कीं न सांजाए।। ४ ।।

आपने अपना ज्ञान दिया। जिसमें किसी तरह का संशय नहीं है। आपने अपनी साहिबी भी दी है। संसार में जिसकी किसी को पहचान नहीं है।

जे आंऊं चाहियां दिलमें, से को न करयो आंई हित।
कोठ्यो को न सुखनसे, जीं थिए न उसीडो हित।। ५ ।।

जो मैं दिल में चाहती हूं, उसे आप यहां क्यों पूरा नहीं करते? हमको सुख में घर क्यों नहीं बुलाते जिससे हमारी उदासी यहां न रह जाए।

मूंके केयज सुरखरू, से लखे भाइयां भाल।
रूहें कोठे अचां आं अडूं, जीं खिल्ली करियां गाल।। ६ ।।

मुझे आप अपने सामने बुलाओ तो आपके लाखों एहसान मानूंगी। रूहों को बुलाकर मैं आपकी तरफ आ जाऊंगी और हंसकर बातें करूंगी।

डिठम सुख सोणेमें, हिक आंझो तोहिजो आए।
मूंसे संग केइए हिन भूंअ में, जे डिए हित सांजाए।। ७ ।।

आपके सुखों को मैंने सपने में देखा। आपका ही एक भरोसा है। यदि आपने यहां अपनी पहचान दी है तो इस संसार में आकर मिलो।

Nijanand App